Date - 10.07.2021. BA I (Sub. I)

## न्याय के रूप :- (प्रकार).

- वितरणकारी न्याय - आर्थिक न्याय कहा जा सकता है। यह औचित्य से संबंधित होता है। इसे साम्यवाद से जोड़ा जा सकता है। समानता को एक मूल नियम मानता है।
- कार्यविधि न्याय - न्याय कैसे दिया जा रहा है? लोग महसूस करें कि न्याय की प्रक्रिया सुस्पष्ट तथा सुसंगत हो तो उससे उत्पन्न असंतुलन को भी वह स्वीकार करने में देरी नहीं करती।
- पुनः स्थापित न्याय - चोरवे से बचने के लिए.
- प्रतिकारी न्याय - इसमें बदला लिये जाने का भाव होता है।
- कानूनी न्याय - कानून के दायरे में की गयी गलतियों के बदले में दंड दिए जाने का न्याय कहा जाता है।
- सामाजिक न्याय - आर्थिक व नैतिक पुरस्कारों (धन, कार्य, सामाजिक स्तर) का न्यायपूर्ण तथा औचित्यपूर्ण वितरण होता है।
- न्याय के वितरण में समतावादी सिद्धांत समान वितरण पर जोर देता है। इस सिद्धांत के अंतर्गत योग्यता, प्रयत्न तथा उत्पादक क्षमता को आधार बनाए बिना सब को एक समान पुरस्कार प्राप्त होते हैं।
- योग्यता सिद्धांत
- साम्यभाव सिद्धांत
- आवश्यकता सिद्धांत - जरूरत के अनुसार. पुरस्कार वेतन मिलता है।

Scanned with CamScanner

## स्वतंत्रता, समानता और न्याय का परस्पर संबंध

अर्नेस्ट बार्कर - न्याय ही वह अंतिम सिद्धांत है जो स्वतंत्रता तथा समानता तथा इन दोनों के विविध पक्ष के बीच ताल मेल उत्पन्न करता है।

स्वतंत्रता और न्याय - व्यक्ति और समाज एक दूसरे के पूरक हैं तथा स्वतंत्रता का लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास और समाज के सामूहिक हित को साधना होता है। राष्ट्रीय संकट के समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कम किया जाता है। राष्ट्रीय संकट के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में भी नागरिक स्वतंत्रताओं को सीमित करने की आवश्यकता अनुभव की जा सकती है। न्याय की मांग है कि राज्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अपेक्षा सामूहिक हितों को अधिक महत्व दे और नागरिक स्वतंत्रताओं पर ये प्रतिबंध इसी आधार पर लगाए जाते हैं।

समानता और न्याय - समानता के सिद्धांत को न्यायसंगत रूप से लागू किया जाना चाहिए। सभी नागरिकों को बराबर अधिकार प्राप्त हों, कर्तव्य भी एक जैसे हों, न्याय की मांग है कि उन्हें विकास के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएं इस प्रकार न्याय का सिद्धांत वास्तविक रूप में समानता की प्राप्ति का मार्ग बताता है।

वर्तमान समय में व्यवहार में स्वतंत्रता और समानता के बीच टकराव की स्थिति या स्वतंत्रता के विविध रूपों में टकराव हो सकता है। न्याय का सिद्धांत यह मांग करता है कि ऐसी प्रत्येक स्थिति में संपूर्ण समाज के हित को ही सर्वोपरि समझा जाना चाहिए। न्याय विभिन्न सिद्धांतों के बीच सामंजस्य उत्पन्न करने का एक साधन है।